कृषि विभाग–पौधा संरक्षण
पौधा संरक्षण सामयिक सूचना

अंक– 12/2014–15

वर्तमान वर्ष 2015 आम का फलन वर्ष है। इसमें फलदार वृक्षों यथा आम एवं लीची के पौधों को इस मौसम में विशेष देख भाल की आवश्यकता है। आम एवं लीची में लगने वाले प्रमुख कीटों एंवं व्याधियों का प्रबंधन किसान भाई निम्न प्रकार से कर सकते है।

(1) आम का मधुआ कीट (Mango Hopper) :– इस मौसम में यह कीट वृक्षों का सबसे ज्यादा नुकसान कर सकती है। इसके शिशु एवं व्यस्क कीट मंजरों एवं मुलायम तना भाग का रस चूसकर कमजोर कर देती है। इसका मधुश्राव (द्रव्य) पत्तियों पर गिरता है जिस पर फफूँद उग आते हैं जिससे पत्तियॉ काली हो जाती है एवं प्रकाश संश्लेषण में बाधा पड़ती है। इसे शूटीमोल्ड के नाम से जाना जाता है। मंजरों की सुरक्षा हेतु निम्न तीन छिड़काव आवश्यक है।

(i) पहला छिड़काव :– पहला छिड़काव मंजर निकलने के पहले डायमेथोएट 30% ई0 सी0 का 2 मि0 ली0 या इमिडाक्लोप्रिड 17.8% एस0 सी0 का 1 मि0 ली0 प्रति 3 ली0 पानी अथवा एसीफेट 75% एस0 पी0 का 1 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल में जिसमें सल्फर 80% डब्लू0 पी0 3 ग्राम प्रति लीटर घोल की दर से मिलाकर पेड़ की तना, शाखाएँ एवं पत्तियों पर अच्छी तरह छिड़काव करना चाहिए। सल्फर मंजर के काला होकर सूखने की बीमारी (पावडरी मिल्ड्यू) से बचाव करता है।

(ii) दूसरा छिड़काव :– मंजरों में सरसों के बराबर दाना बन जाने पर पहले छिड़काव के कीटनाशी के साथ कॉपर ऑक्सी क्लोराइड 50 % घु0 चूर्ण का 3 ग्राम या कार्बनडेजिम 50% घु0 चू0 का 1 ग्राम प्रति लीटर पानी एवं फलों को गिरने से रोकने के लिए नैफथेलीन एसेटिक एसीड (प्लानोफिक्स) का 10 लीटर पानी में 4 मि0 ली0 की दर से छिड़काव करना चाहिए।

(iii) तीसरा छिड़काव :– जब मटर के बराबर टिकोले बन जाय तो द्वितीय छिड़काव में अनुशंसित कीटनाशी, फफूँदनाशी एवं हार्मोन का तीसरा छिड़काव करते है।

(2) आम/लीची में लगने वाले दहिया कीट(Mealy bug) :– इस कीट के शिशु एवं मादा आम एवं लीची के पौधों की कोशिकाओं का रस चूस लेते है जिसके कारण मुलायम तने और मंजर सूख जाते है तथा फल गिर जाते है। इसका आक्रमण पौधों की मुलायम फुनगियों पर होने से पौधों की बढ़वार रूक जाती है एवं उपर काले रंग की फफूँद विकसित हो जाती है, जो प्रकाश संश्लेषण किया को प्रभावित करते हैं।

प्रबंधन :– (i) बाग की मिट्टी की निकाई गुड़ाई करने से इस कीट के अण्डे नष्ट हो जाते है।

(ii) पौधे के मुख्य तने के जड़ वाले भाग में 30 से0 मी0 चौड़ी अल्काथीन या प्लास्टिक की पट्टी लपेट देने एवं उस पर कोई चिकना पदार्थ ग्रीस आदि लगा देने से इस कीट के शिशु पेड़ पर चढ़ नहीं पाते है।

(iii) जड़ से 3 से 4 फीट तक धड़ भाग को चूना से पुताई करने पर भी इस कीट के नुकसान से बचा जा सकता है।

(iv) इमिडाक्लोप्रिड 17.8% एस0 एल0 का 1 मि0 ली0 प्रति 3 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।

(3) आम पर काला दाग :– आम के पत्तियों एवं फलों पर छोटा–छोटा काला दाग पड़ जाता है जो कौलेटोट्रिकम नामक फफूँद के कारण होता है यह रोग एन्थ्रेक्नोज के नाम से जाना जाता है।

प्रबंधन/ निदान :– इसके रोक थाम के लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराईड 50% घु0 चू0 का 3 ग्राम अथवा कार्बनडेजिम 50% डब्लू0 पी0 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

(4) लीची माईट :– इस कीट का व्यस्क एवं शिशु पत्तियों के निचले भाग पर रहकर रस चूसते है जिसके कारण पत्तियॉ भूरे रंग के मखमल की तरह हो जाती है तथा अंत में सिकुड़कर सूख जाती है। इसे ''इरिनियम'' के नाम से जाना जाता है। यह कीट मार्च से जुलाई तक ज्यादा सकिय रहते है।

प्रबंधन :– (i) इस कीट से ग्रस्त पतियों एवं टहनियों को काट कर जला देना चाहिए।